विलुप्ति के कगार पर सरीसृप

नरेन्द्र देवांगन

प्रकृति की खूबसूरती का अभिन्न अंग है रहस्य और रोमांच से भरी सरीसृपों की दुनिया। ऐसे जीवों का समूह, जो विभिन्न रूपों में दुनिया के हर एक कोने में पाए जाते हैं। कुछ बेहद खतरनाक माने जाते हैं तो कुछ बेहद मददगार, लेकिन इतना ज़रूर है कि ये रेंगने वाले जीव अपने अनूठेपन के कारण बरबस ही आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं। लेकिन प्रकृति का यह विशिष्ट आकर्षण अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्व के 19 फीसदी सरीसृपों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार अभी तक सरीसृपों की कई प्रजातियां मानवीय हस्तक्षेप, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण आदि कारणों से लुप्त हो चुकी हैं या होने को हैं।

ज़ुऑलॉजिकल सोसायटी ऑफ लंदन (ज़ेडएसएल) के नेतृत्व में किए गए एक शोध में पाया गया है कि दुनिया के 19 फीसदी सरीसृपों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इसके अलावा 12 फीसदी सरीसृप गंभीर रूप से खतरे में हैं और 41 फीसदी सरीसृपों को साधारण खतरे में बताया गया है। पर्यावरण विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया है कि दुनिया के 47 फीसदी सरीसृप ऐसे हैं, जिनका अस्तित्व अति संवेदनशील है, वहीं तीन प्रजातियों के विलुप्त होने की आशंका बनी हुई है।

विश्व की 1500 प्रजातियों पर किया गया यह सर्वे *बायोलॉजिकल कंज़र्वेशन* नामक विज्ञान जर्नल में प्रकाशित हुआ है। यह शोध इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंज़र्वेशन ऑफ नेचर्स (आईयूसीएन) के स्पीशीज़ सर्वाइवल कमीशन के 200 वैज्ञानिकों के परस्पर सहयोग से पूर्ण किया गया।

छिपकली, सांप आदि रेंगने वाले जीवों को सरीसृप कहा जाता है। सरीसृप ऐसे जीव हैं, जिसका शरीर बालों की बजाय शल्कों से ढंका रहता है। ये खोल वाले अंडे देते हैं। अपने शरीर को गर्म रखने के लिए ये बाहरी वातावरण के तापमान पर निर्भर रहते हैं।

सरीसृपों के चार मुख्य समूह हैंः कछुए, छिपकली, सांप और मगर। सरीसृप पृथ्वी पर इस समय जीवित सबसे प्राचीन प्राणियों में से हैं, जिनकी उत्पत्ति 30 करोड़ वर्ष पहले हुई मानी जाती है। टर्टल, एम्फिसबेनियन्स (वॉर्म लिज़ार्ड्स), टॉर्टस आदि भी इनमें शामिल हैं। एक अनुमान के अनुसार विश्व में सरीसृपों की लगभग 9500 प्रजातियां मौजूद हैं।

मुख्य शोध लेखक डॉ. मोनिका बोहम के अनुसार यद्यपि टुआटारा जैसी कुछ प्रजातियां, जो कि लाखों वर्षों के बाद भी अपेक्षाकृत बिना किसी परिवर्तन के अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, सरीसृप इस बात की ओर अक्सर इशारा करते हैं कि वे पर्यावरण जनित समस्याओं से प्रभावित हो रहे हैं। बोहम कहती हैं कि अमूमन सरीसृप विषम परिस्थितियों वाले आश्रय स्थलों में निवास करते हैं। ये बेहद जटिल पर्यावरणीय परिस्थितियों में रहते हैं। ऐसे में यह कल्पना करना बेहद आसान होता है कि वे दुनिया के बदलते समग्र परिदृश्य में बेहतरी से जी रहे हैं। इस शोध में उल्लेख किया गया है कि विलुप्ति के खतरे का स्तर विभिन्न प्रकार के, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले सरीसृप समूहों के लिए बढ़ जाता है, जो कृषि और वृक्ष कटाई की ओर से दबाव का सामना कर रहे हैं।

एक छिपकली *एमीवा विटाटा* जो जंगलों में पाई जाती है, गंभीर खतरे वाली सूची में शामिल की गई है। बोलीविया के केवल एक हिस्से में इसकी उपस्थिति दर्ज की गई है।

इसके आश्रयस्थलों के नष्ट होने के बाद की गई दो हालिया खोजों में इसके पाए जाने के प्रमाण हासिल नहीं हुए हैं, जिनके आधार पर संरक्षणवादी इसके भावी अस्तित्व पर सवालिया निशान लगा रहे हैं।

हैटी में होने वाली वनों की व्यापक कटाई के कारण, यहां पाई जाने वाली *एनोलिस* छिपकली की 9 में से 6 प्रजातियों के स्थानीय स्तर पर विलुप्त होने का खतरा पाया गया है। इसके अलावा तंज़ानिया में पाए जाने वाला *कैमिलियो लेट्रिपीनिस,* ग्रीन वाइन स्नेक, *लाइरियोसेफेलस सेक्यूटिफ* नामक मेंढक भी विलुप्ति के संकट से गुज़र रहे हैं।

इसके अलावा फ्रेश वॉटर टर्टल (मीठे पानी का कछुआ) की स्थिति भी चिंता का विषय है। शोध के अनुसार इन कछुओं के अस्तित्व के समाप्त होने का खतरा 50 फीसदी तक है। वहीं 30 फीसदी फ्रेश वॉटर सरीसृप ऐसे हैं, जो पूर्ण रूप से विलुप्ति के कगार पर हैं। ये कछुए फसल कटाई, खाद्य सामग्री के रूप में इस्तेमाल में आने और पालतू जंतु व्यापार के कारण विलुप्ति के संकट से जूझ रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***